Cambridge International AS Level

Cambridge International Examinations
Cambridge International Advanced Subsidiary Level

HINDI LANGUAGE **8687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2018**

INSERT

1 hour 45 minutes

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

This Insert contains the reading passages for use with the Question Paper.

You may annotate this Insert and use the blank spaces for planning.

The Insert is **not** assessed by the Examiner.

सर्वप्रथम ये निर्देश पढ़ें

इस अंतःपत्र में वे पठनीय गद्यांश हैं जिनका प्रश्नपत्र के लिए प्रयोग होना है।

आप इस अंतःपत्र पर लिख सकते हैं और योजना के लिए खाली स्थान का उपयोग कर सकते हैं।

परीक्षक इस अंतःपत्र का मूल्यांकन **नहीं** करेगा।

This document consists of **3** printed pages and **1** blank page.

© UCLES 2018

CAMBRIDGE International Examinations

भाग 1

गद्यांश 1 को पढ़ें और **प्रश्न 1, 2** और **3** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 1

शिक्षक बनने से पहले

कई बार लोग अध्यापन कार्य को हल्के रूप में ले लेते हैं। जैसे ही पढ़ाई ख़त्म होती है, हर कोई कहने लगता है कि बस अब कहीं न कहीं नौकरी पर लग जाओ। कुछ नहीं तो किसी स्कूल में या फिर घर पर ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दो। ऐसा कहते समय शायद यह नहीं सोचा जाता कि वह व्यक्ति इस कार्य के लिए पूरी तरह तैयार और उपयुक्त भी है या नहीं।

जब मैं एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ती थी तब वहाँ उस साल स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली हमारी एक वरिष्ठ छात्रा को शिक्षिका बना दिया गया था। इतनी प्रतिभाशाली होते हुए भी कक्षा का मन उनके व्याख्यान में बिल्कुल नहीं लगता था। कभी-कभी लगता था कि उनकी कक्षा का बहिष्कार कर दिया जाए। लेकिन आंतरिक मूल्यांकन के अंकों और उपस्थिति की अनिवार्यता के चक्कर में कक्षा में बने रहने की मजबूरी भी होती थी। लगता था कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए तो कोचिंग क्लास है ही।

बार-बार यही प्रश्न सामने आ जाता है कि अच्छी शिक्षण संस्थाओं की उपलब्धता के बावजूद कोचिंग कक्षाओं की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? यह मान भी लिया जाए कि कमज़ोर विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए यह ज़रूरी है, तो फिर क्या कारण हैं कि पढ़ने-लिखने में बहुत तेज़ बच्चे भी वहाँ जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं? यह किस बात की ओर संकेत कर रहा है, अच्छी तरह समझा जा सकता है। भारी फ़ीस लेने और बेहतर सुविधा देने वाले संस्थानों में आखिर ऐसी क्या कमी रह जाती है कि विद्यार्थियों को दोहरी मेहनत करनी पड़ती है और अभिभावकों को दोहरा ख़र्च करने के लिए विवश होना पड़ता है।

बात सीधी-सी है। जो काम सबसे ज़्यादा ईमानदारी, समर्पण और निष्ठा की माँग करता है, उसे ही सबसे आसान और सहज मान कर गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। एक माँ जिस तरह बच्चे को जन्म देती है, उसी तरह एक शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व को बनाने का काम करता है। सूचना क्रांति के इस ज़माने में भले ही सब कुछ इंटरनेट के ज़रिए हासिल करना संभव हो गया हो, लेकिन कुछ बातें अभी भी एक साथ बैठ कर, सामूहिकता के साथ ही सीखना और सिखाया जाना संभव है।

अच्छा शिक्षक वही होगा जिससे हर पल विद्यार्थियों को कुछ न कुछ मिलता रहे, वह चाहे जीवन जीने की कला हो या पाठ्यक्रम की कोई परिभाषा। उसका व्यक्तित्व ऐसा हो जिसमें विद्यार्थियों को विश्वास व्यक्त करने में कोई संकोच नहीं हो। विद्यार्थी उसमें अपना एक रचनात्मक दोस्त व पथ-प्रदर्शक देख सकें।

भाग 2

गद्यांश 2 को पढ़ें और **प्रश्न 4** और **5** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 2

शिक्षक की चुनौतियाँ

आजकल की युवा पीढ़ी पढ़ने-लिखने के प्रति उदासीन होती जा रही है। इस प्रवृत्ति का एक बड़ा कारण यह है कि हमने शिक्षा को छात्रों में जिज्ञासा जगाने और उन्हें सोचने और विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाने के बजाय उन पर तथ्य और ज्ञान उड़ेलने की प्रक्रिया बना रखा है। शिक्षक किसी बरसाती बादल की तरह कक्षा में आता है और सूचनाओं की बरसात करके चला जाता है। पाठ्य पुस्तकें भी छात्रों को कुछ नया सोचने और जानने के लिए प्रेरित करने की बजाय बस मतारोपण का काम करती हैं। सारा ज़ोर ऐसे तथ्यों को रटाने पर होता है जिन्हें परीक्षा में उगल कर उपाधियाँ और नौकरियाँ हासिल की जा सकें।

सूचना प्रौद्यौगिकी के इस ज़माने में छात्रों के पास कुछ मामलों में शिक्षकों से ज़्यादा और विविध सूचनाएँ होती हैं। वे मशीनों को अपना स्कूल और सूचना तकनीक को शिक्षक मानने लगे हैं। इसलिए उन्हें निरे तथ्यों और ज्ञान से बाँध कर नहीं रखा जा सकता। उनका ध्यान खींचने और आदर पाने के लिए शिक्षकों को नए दृष्टिकोण और पढ़ाने की नई-नई शैलियाँ खोजनी होंगी। अन्वेषक बनना होगा और छात्रों को भी ज्ञान की खोज में शामिल करना होगा। पढ़ाई की ओर मोड़ने के लिए छात्रों में जिज्ञासा जगानी होगी और उनसे ऐसे सवाल पूछने होंगे जो उन्हें उत्तर खोजने के लिए बेचैन कर सकें, जिनसे ज्ञान की भूख जगे, उन्हें स्वाध्याय की प्रेरणा मिले और उनकी सृजनात्मक शक्ति का विकास हो।

यही नहीं, आज के इस बहुसांस्कृतिक और बहुभाषाई समाज में बच्चों का आदर्श बनने के लिए शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक ज्ञान का दायरा भी बढ़ाना होगा। भिन्न-भिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों की क्षमताओं और ज़रूरतों को समझना-सीखना होगा ताकि वे छात्रों के भीतर छुपी प्रतिभा को पहचान सकें और उन्हें अपनी क्षमता का समुचित प्रयोग करना सिखा सकें। उन्हें एक-दूसरे की भिन्नता को ताकत के रूप में देखना और उसका आदर करना सिखा सकें। दूसरों की आलोचना और मतभेद से सीख लेना और अपने आप को निखारना सिखा सकें। मिल-जुल कर काम करना और नए-नए परिवर्तनों के लिए दिल और दिमाग़ को खुला रख सकें जिससे छात्रों में एक संवदेनशील और उदारवादी दृष्टिकोण का विकास हो पाए।

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2018